बेख़बर जी की शादी

—अनन्त कुमार, एम० ए०

बेरहबार जी
की
शादी

(हास्यरसपूर्ण, समस्या-मूलक, स्त्री-चरित्र-रहित, सामाजिक नाटक)

लेखक

अनन्त कुमार, एम० ए०

प्रकाशक :—

मगध कलाकार प्रकाशन,

१०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना—१ (बिहार)

प्रकाशक—
अशोक प्रियदर्शी,
मगध कलाकार प्रकाशन,
१०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना-१
(बिहार)

● नवम्बर, १९७२

● मूल्य—~~१ रु० ७५ पैसे~~
3/-

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

मुद्रक—
हुंकार प्रेस,
पटना-१

दो शब्द

हिन्दी साहित्य में पढ़ने के लिए नाटकों का उतना अभाव नहीं, जितना अभिनेय नाटकों का है। मंच की दृष्टि से लिखे गये नाटक कम हैं और प्रस्तुत नाटक उन कम की कोटि में रखा जा सकता है। कम ही नाटक ऐसे होते हैं जो पठनीय एवं अभिनेय—दोनों होते हैं, अन्यथा पठनीय प्रायः अभिनेय नहीं होता और अभिनेय पठनीय नहीं। अभिनय की दृष्टि से लिखित नाटक को नाटक का प्रारूप ही मानना पड़ता है। उक्त दृष्टि से प्रस्तुत नाटक एक अच्छा प्रारूप है। इसकी विशेषता इसमें है कि इसे एक सामाजिक-आर्थिक समस्या पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से लिखा गया है।

सोद्देश्यता कभी-कभी कलात्मकता के लिए बाधक भी होती है—कहा जाय, अधिकतर ऐसा ही होता है किन्तु सोद्देश्य होते हुए भी प्रस्तुत नाटक अभिनेय और रुचिकर है। मंच के आडम्बर अनेक होते हैं। नतीजा नाटक खेलने में कठिनता। व्ययसाध्य हो उठता है वह तब। यह नाटक आडम्बर की दृष्टि से अत्यधिक सरल है किन्तु नाटकीय दृष्टि से सफल।

मंच में रुचि रखनेवाले इसका स्वागत करेंगे, ऐसा विश्वास है।

नर्बदेश्वर प्रसाद सिन्हा 'नरेश'
उपनिदेशक, गीत-नाट्य-शाखा,
जनसम्पर्क विभाग,
बिहार

भूमिका

प्रस्तुत नाटक मेरे अनुज श्री अनन्त कुमार की प्रथम रचना है। अनन्त जी की रुचि बचपन से ही नाटकों में रही है। मैंने जब सांस्कृतिक नाट्य संस्था 'मगध कलाकार' की स्थापना की तो प्रारम्भ से ही वे इस संस्था द्वारा आयोजित नाटकों में प्रमुख रूप से भाग लेते रहे। उस संस्था के विकास में अनन्त जी का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आज का समाज, कालाबाजारी, मुनाफाखोरी आदि तत्वों से जर्जर हो रहा है। इस नाटक में अनन्त जी ने ऐसे ही समाज-विरोधी तत्वों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करना चाहा है। व्यंग, हास्य और शिक्षा से भरपूर यह नाटक बड़ा ही मनोरंजक है। इसके पढ़ने और खेलने-दोनों में-आनन्द आयेगा—ऐसा मेरा विश्वास है। नाटक में स्त्री-चरित्र बिल्कुल नहीं है। इसमें सिर्फ दो दृश्य हैं। भाषा चलती-फिरती और सुबोध है। इन कारणों से यह नाटक पूर्ण-रूपेण रंगमंचीय बन पाया है। आशा है, नाटक-प्रेमी इस रचना का स्वागत करेंगे।

आकाशवाणी,
राँची

—चतुर्भुज
८-७-६५

पात्र-परिचय

१.	कालू प्रसाद	—एक व्यवसायी
२.	एतवारी लाल	—कालू प्रसाद का पुत्र
३.	तोताराम	—कालू प्रसाद के मित्र; बाद में समधी
४.	बनवारी	—तोताराम का पुत्र
५.	रामलाल	—एक युवक
६.	फग्गू	—कालू प्रसाद का नौकर

—×—

यह नाटक बिहार सरकार की गीत-नाट्य-शाखा, जन सम्पर्क विभाग द्वारा कई बार सफलता-पूर्वक अभिनीत किया गया है।

★

पहला दृश्य

(कालू प्रसाद के घर का एक भाग। कमरे में एक चौकी है जिस पर बिछावन बिछा है। दो कुर्सियाँ भी कमरे में रक्खी हैं। मकान मालिक कालू प्रसाद चौकी पर बैठकर हिन्दी का एक अखबार पढ़ रहे हैं। वे चश्मा लगाये हुए हैं। उनकी एक आँख से दिखायी नहीं पड़ता क्योंकि वह आँख खराब है। उम्र लगभग पचास वर्ष।)

कालू— कैसी अच्छी खबर है! सीमा पर दुश्मन! देश के अन्दर दुश्मन! वाह वाह!—घर भी दुश्मन, बाहर भी दुश्मन! अरे बेवकूफ, कौन है दुश्मन? आ हा हा!—ये तो मेरे मित्र हैं—परम मित्र! देश हो या विदेश! जिससे फायदा हो, वही है दोस्त। अगर इनकी कृपा न होती तो कलुआ आज बाबू कालू प्रसाद न होते।—कालू प्रसाद एन्ड सन्स चीनी-वाले! कालू प्रसाद एण्ड ब्रदर्स तेल वाले! कालू प्रसाद एण्ड कम्पनी आटा वाले!—ये हैं मेरे कारोबार! नाम एक, रूप अनेक!

तोताराम—(नेपथ्य से) बाबू कालू प्रसाद जी घर में हैं?

कालू— ओह! इन बेवकूफों के मारे तो नाक में दम है। न जगह देखते हैं न वक्त। बस बेवक्त की शहनाई फूँक देते हैं। कभी-कभी तो मिजाज बहुत भिन्ना उठता है। लेकिन ऐसी ही नाजुक घड़ी में स्वर्ग की ओर प्रस्थान करनेवाले अपने पिता जी के वचन याद आ जाते हैं—'बेटा कालू, कारोबार

में बेईमानी करने की माफी है, लेकिन जुबान जरा मीठी रखना।'

तोताराम— (नेपथ्य से) क्यों भाई, क्या बाबू कालू प्रसाद जीवित हैं?

कालू— (चौंक कर) जीवित हैं? क्या मतलब? क्या मैं जीवित नहीं हूँ? नहीं, ऐसे बदतमीज से भेंट करना ठीक नहीं है। मैं भेंट नहीं करूँगा।

तोताराम— (नेपथ्य से)अरे, क्या बाबू कालू प्रसाद मर गये? कुछ तो जवाब दो भाई?

कालू— (दाँत पीसकर) अरे, क्या बाबू कालू प्रसाद का यह तीसरा स्टेज है? पहले पूछा—घर में हैं? फिर पूछा—जीवित हैं? और अन्त में पूछा—क्या मर गये?—मैं कहता हूँ कि कालू प्रसाद मर गये, स्वर्गवासी हो गये तो तुम्हारे बाप का क्या?—

तोताराम—(नेपथ्य से) कोई नहीं बोलता। देखो भाई, मैं दरवाजा तोड़ दूँगा, वरना फौरन जवाब दो।

कालू— यह आदमी नहीं, कम्बख्त छूत का रोग है। कालू प्रसाद मर जाये यह तो बर्दाश्त किया जा सकता है। लेकिन अगर यह कीमती दरवाजा टूट गया तो?

(दरवाजे पर धक्के पड़ते हैं)

कालू— (चिल्लाकर) अबे, कौन इस तरह बदतमीजी कर रहा है? मेरे नौकर क्या मर गये?—दरवाजा टूट

गया तो मरम्मत कराने के पैसे कौन देगा ?—अरे फग्गू !

(नौकर फग्गू भीतर से गमछा सम्भालते आता है)

कालू— तू क्या सो रहा था ?

फग्गू— नहीं मालिक, अभी तो ऊँघ रहा था। अब सोने की इच्छा हो रही है।

कालू— इच्छा हो रही है सोने की ! वाह-री इच्छा ! और ये बाबू कालू प्रसाद के दरवाजे पर कोई पहलवान जो हाथ की आजमाइश कर रहा है, वो तू नहीं सुनता ?

फग्गू— सुनता हूँ मालिक। आवाज बहुत साफ आ रही है। कोई मजबूत आदमी मालूम पड़ता है।

कालू— तो तूने हटाया क्यों नहीं ?

फग्गू— आपके हुकुम का इन्तजार था। अगर आप कहेंगे…

कालू— सुन, वह आदमी अगर सूरत शक्ल से शरीफ हो तो उसे मेरे पास ले आ।

फग्गू— और अगर कोई लफन्दर कट का मालूम पड़ा तो ?

कालू— क्या ?

फग्गू— मेरा मतलब लफन्दर कट से है याने अगर वह बिगड़े दिल हुआ तो ?

कालू— तो…तो…

फग्गू— मैं बताऊँ ?

कालू— बताओ।

फग्गू— मैं उसे दो चार लप्पड़ रसीद कर दूँगा।

कालू— बहुत ठीक। तुम बड़े अच्छे हो। जाओ।

(फग्गू जाने लगता है बाहर की ओर)

सुनो फग्गू, इधर आओ। क्या तुम मुझे बेवकूफ समझते हो ?

फग्गू— (घूमकर) क्या मतलब ? मालिक, आपकी शकल-सूरत तो कुछ-कुछ अच्छी है याने शरीफ आदमी की तरह है।

कालू— तुम गदहे हो। तुम उसे दो-चार थप्पड़ रसीद करोगे। वह भी तुम्हें दो-चार धौल देगा। फिर कुश्तम-कुश्ती। पुलिस आयेगी। केस चलेगा। वह बन्दर और तुम तो जेल में प्रेम से हनुमान चालीसा पढ़ोगे और मैं बर्बाद हो जाऊँगा।—फग्गू, मैं बहुत समझदार आदमी हूँ।

(फग्गू अपना चेहरा ऐसा बना लेता है, मानों वह मालिक की बुद्धि की प्रशंसा करता हो)

फग्गू— मालिक सचमुच गणेशजी की तरह बुद्धिमान हैं, तभी तो देश-विदेश के लोग आपसे मिलने आते हैं। अच्छा मालिक, घबराइए मत। मैं उससे बिना झगड़ा किये निबट लूँगा। आप फिक्र न करें।

कालू— (प्रसन्न होकर) वाह फग्गू ! तुम बड़े होशियार नौकर हो। अब तुम जा सकते हो। लगता है, वह बदतमीज भी थक गया है। दरवाजे पर दस्तक

पड़ने बन्द हो गये। खैर, तुम देखो तो वह कौन शैतान है!

(फग्गू चला जाता है)

कालू— मेरा नौकर बड़ा समझदार है। मेरे इशारे को फौरन भाँप लेता है।

(थोड़ी देर तक टहलता रहता है। फग्गू का पुनः प्रवेश)

फग्गू— मालिक, जिसे आप बदतमीज कह रहे हैं, वे तो बाबू तोताराम जी हैं। आपसे भेंट करना चाहते हैं। बहुत जरूरी काम है।

कालू— बहुत जरूरी?

फग्गू— हाँ मालिक, बहुत जरूरी।

कालू— अच्छा फग्गू, यह बताओ कि उनके साथ कोई पुलिस का आदमी या कोई समाज सेवक या किसी अनाथालय का कोई कार्यकर्त्ता तो नहीं है।

फग्गू— मालिक, मैंने अपनी दोनों आँखों से खूब गौर से देखा है। बाबू तोताराम अकेले हैं।

कालू— तब फिर डर की कोई बात नहीं। जा, उन्हें आदर के साथ बुला ला। और देख, जरा इलायची-सुपारी वगैरह का इन्तजाम करना मत भूल जाना। तू जानता है न, वे राशनिंग कमेटी के एक मेम्बर हैं।

फग्गू— यानी उनकी वजह से राशनिंग हुई है।

कालू— नहीं फग्गू, उनकी वजह से मुझे चीनी वगैरह के लाइसेंस मिले हैं।

फग्गू— मालिक, मैं समझ गया। अब मैं उन्हें बुलाने जाता हूँ।

कालू— फग्गू, एक काम पहले कर दे।

फग्गू— मैं दो काम पहले कर सकता हूँ मालिक। हुकुम दीजिए।

कालू— इन कुर्सियों को जरा झाड़ दे ठीक से।

(फग्गू दोनों कुर्सियों को झाड़ देता है। फिर बाहर चला जाता है। कालू एक कुर्सी पर बैठ जाता है और तोताराम का इन्तजार करता है।)

कालू— तोताराम कहीं उड़ तो नहीं गये। काफी देर हो चुकी है।

(फग्गू के साथ तोताराम का प्रवेश। बुजुर्ग आदमी। आँखों पर चश्मा। हाथ में छड़ी। पुरानी रईसी की छाप।)

कालू— नमस्कार बाबू तोताराम जी।

तोताराम—नमस्कार! नमस्कार!

(दोनों कुर्सी पर बैठते हैं)

कालू— आपको दरवाजे पर काफी देर तक रुकना पड़ा। मैं इसके लिए बड़ा लज्जित हूँ।

तोताराम—मैंने भी तो क्रोध में कुछ अपशब्द कहे आपको। आप भी मुझे माफ करेंगे।

कालू— कोई बात नहीं तोतारामजी! अरे फग्गू, जरा चाय का तो प्रबन्ध कर।

फग्गू— अच्छा मालिक! (अन्दर चला जाता है)

कालू— हाँ, मुंशीजी, कैसे आना हुआ आपका? मेरे लिए, कोई सेवा?

तोताराम—सेवा ? सेवा तो मैं करने के लिए आया हूँ कालू प्रसाद जी !

कालू— आप सेवा करेंगे ? अजी, शर्मिन्दा न कीजिए मुंशीजी। भला मैं किस लायक हूँ ?

तोताराम—मैं तो आपकी शरण में आया हूँ आज।

कालू— शरण में ? अजीब बात है ! मुंशीजी, लगता है, आप गलती से मेरे पास आ गये। आपको जाना कहीं और था, वरना यहाँ शरण-वरण का सवाल कहाँ है ?

तोताराम—है सवाल। शरण का भी और वरण का भी।

कालू— मुंशी जी, अपने राम संस्कृत नहीं जानते। गलत-सलत अंगरेजी-हिन्दी से अपना काम चल जाता है। इसलिए आपकी बात समझ में नहीं आ रही है।

तोताराम—आपका लड़का इन दिनों क्या करता है ?

कालू— आप एतवारी के बारे में पूछ रहे हैं ?

तोताराम—जी हाँ।

कालू— एतवारी तीन साल से बी० ए० फेल कर रहा है। आजकल उसके ख्यालात कुछ ऊँचे हो रहे हैं अर्थात् वह कवि हो गया है। जमीन, आसमान, नदी, पहाड़ पर वह कविता लिखता है। एक बार उसने मुझपर भी एक कविता लिख दी। मैंने सुनकर उसे बहुत फटकारा और समझाया कि बेटे, अच्छे कवि

दूसरों पर कविता लिखते हैं, अपने पर नहीं। वह मान गया।

तोताराम—बहुत सुन्दर। एतवारी लालजी कवि हैं और बी० ए० तक पढ़ चुके हैं।

कालू— बी० ए० तक पढ़ने की बात नहीं है, बी० ए० तीन साल से फेल कर रहे हैं। यानि बिल्कुल, काफी सफाई से, फेल कर रहे हैं। लेकिन मुंशीजी, आप एतवारी के बारे में यह सब क्यों पूछ रहे हैं ?

तोताराम—कालू प्रसादजी, मैं आपके पास शादी के सिलसिले में आया हूँ।

कालू— आना ही चाहिए। अपने आदमी से ही लोग राय-मशविरा करते हैं।

तोताराम—मेरी एक लड़की है। देखने में काफी सुन्दर है, सुशील है, घर का काम-काज कर लेती है, कुछ पढ़ी-लिखी भी है। उसी के लिए वर की तलाश में हूँ। यदि आपके पुत्र से उसकी शादी की बात पक्की हो जाय तो बड़ा कल्याण हो।

(कालू प्रसाद गौर से तोताराम की ओर देखता है)

तोताराम—आप इतने ध्यान से मेरी ओर क्यों देख रहे हैं ?

कालू— आप लक्ष्मी हैं।

तोताराम—क्या कहा आपने ?

कालू— आप लक्ष्मी हैं—यानी आप देनेवाले हैं। इसीसे मैं गौर से आपकी तरफ देखने लगा था।

तोताराम—तो इस रिश्ते के मोतल्लिक आपका क्या फैसला है ?

कालू— फैसले में समय लगेगा। सोचना-समझना पड़ेगा। लड़का कवि है। उससे भी पूछना पड़ेगा। मैं कहूँ कुछ, और वह कहे कुछ, तो बेड़ा गर्क हो जायेगा।

तोताराम—जी हाँ, यह तो ठीक है। लेकिन इसके सम्बन्ध में जल्दी ही कुछ तय कर दीजिए तो अच्छा रहेगा।

कालू— अच्छा तोतारामजी, जब हम दोनों में रिश्ते की बात हो रही है तो यह जान लेना भी मुनासिब होगा कि आप देंगे क्या ?

तोताराम—यानी आप तिलक-दहेज की बात कर रहे हैं। क्यों ?

कालू— सही फरमाया आपने।

तोताराम—कालू प्रसादजी, मैं ठहरा लड़कीवाला। मैं कैसे कुछ कह सकता हूँ। फरमाइश तो आप ही करेंगे।

कालू— मुंशीजी, बात यह है कि इस लड़के की शादी के लिए बहुत लोग आ रहे हैं। मैंने सबको नाहीं कर दी है। लेकिन आपकी बात मैं नहीं टाल सकता। अगर आप मेरी माँग मंजूर करें तो रिश्ता तय हो सकता है।

(इसी बीच फग्गू दो कप चाय लेकर आता है। दोनों चाय पीने लगते हैं। बातें चलती रहती हैं।)

तोताराम—लेकिन आपकी माँग क्या है—यह तो जान लूँ मैं।

कालू— राजापुर के एक रईस आये थे। दस हजार दे रहे थे। मैं पन्द्रह हजार माँगता था। बात टूट गयी। अब आप स्थिति समझ लें।

तोताराम—यानी आपकी माँग पन्द्रह हजार रुपये की है।

कालू— जी हाँ, आप जानते हैं कि लड़का बी० ए० तक पढ़ चुका है और···

तोताराम—और वह तीन बार बी० ए० फेल हो चुका है। यह कहना तो आप भूल ही गये।

कालू— भूल नहीं गया हूँ। लेकिन उसके फेल करने की कुछ जरूरी वजहें थीं।

तोताराम—जी हाँ, एक वजह यह थी कि लड़का कविता लिखता है। है न यही बात ?

कालू— जी हाँ, इसके अलावा भी वजहें थीं।

तोताराम—गोली मारिये इन वजहों को। यह बताइये कि पन्द्रह हजार के अलावा भी आपकी कुछ और माँग है ?

कालू— मुंशी तोतारामजी, लड़का जरा शौकीन तबियत का है। उसकी ख्वाहिश है कि वह मोटर साइकिल खरीदे। मोटर साइकिल की कीमत इन दिनों क्या है, मुझे नहीं मालूम।

तोताराम—और कुछ ?

कालू— जी हाँ, जब रिश्ते की बात तय हो जायगी तब आप एक कीमती, घड़ी और बढ़िया रेडियो अपनी ओर से देंगे ही।

तोताराम—बाबू कालू प्रसाद जी, आपने करीब बीस-पच्चीस हजार की फेहरिश्त दे दी है। फर्ज कीजिए कि मैंने यह सब दे दिया, फिर आप क्या देंगे ?

कालू— (हँसते हुए) कमाल है मुंशी जी। मैं तो अपना लड़का दूँगा। यह क्या कम है ?

तोताराम—तो क्या लड़के को बेचकर आप नफा कमाने के चक्कर में हैं ?

कालू— इसे आप नफा कमाना कहते हैं मुंशी जी ? अजी यह सिलसिला तो भगवान ने ही लगा दिया है।

तोताराम—तो क्या यह फेहरिश्त भी भगवान ही ने आप के पास भेजी है ? देखिये कालू प्रसाद जी, धन के घमण्ड में इन्सानियत को मत भूल जाइये। मैं आपके दरवाजे पर आया हूँ। जरा इसका ख्याल कीजिए। आप अच्छी तरह जानते है कि मैं इतने रुपये खर्च करने की स्थिति में नहीं हूँ। अगर आपकी कृपा हो तो मेरे निवेदन पर विचार करें।

कालू— मुंशीजी, अगर आपकी हैसियत मुझसे कम है तो यह रिश्ता नहीं हो सकता।

तोताराम—क्या ?

कालू— जी हाँ।

तोताराम—अच्छी बात है। कालू प्रसाद जी, दुनिया में धन से भी ऊँची एक चीज है—वह है इन्सानियत। किसी रोज आप यह जान सकेंगे। खैर, नमस्कार!

(प्रस्थान। कालू प्रसाद तोताराम को जाते हुए देखता रहता है। फिर एकाएक कुछ बात याद आ जाती है और वह बोल उठता है—)

कालू— अरे फग्गू!

फग्गू— (जो पहले से वहाँ मौजूद है) सरकार!

कालू— मुझे संभाल फग्गू। मेरी आँख के सामने अन्धेरा छा रहा है।

फग्गू— कौन-सी आँख के सामने ?

कालू— अरे शैतान! क्या तू नहीं जानता कि मेरी आँख सिर्फ एक है जैसे आसमान में एक सूरज।

फग्गू— हुजूर, क्या चेहरे पर ठण्ढा जल छिड़कूँ ?

कालू— फग्गू, क्या तोताराम सचमुच चले गये ? कहीं उन्होंने मेरा कच्चा-चिट्ठा कमेटी में कह दिया तो गजब हो जायेगा फग्गू।

फग्गू— चले नहीं गये, तोताराम हाथ से उड़ गये हुजूर।

कालू— बहुत गजब हो जायेगा फग्गू।
(अपने गमछे से कालू प्रसाद के सिर पर हवा करता है।)

फग्गू— गजब तो होना ही चाहिए मालिक।

कालू— फग्गू, क्या तुम तोताराम को वापस ला सकते हो ? —मैं तुम्हें मुँहमाँगा इनाम दूँगा।

फग्गू— हुजूर, जब तोताराम उड़ गये तो उड़ गये। अब तो जाना मुश्किल है।

(दरवाजे पर दस्तक पड़ती है।)

कालू— (खूब प्रसन्न होकर) आ गये! फग्गू लाल, आ गये मुंशी तोताराम। वे मुझसे उड़ नहीं सकते। उन्हें आना ही है।—अबे, देखता क्या है? दरवाजा खोल दे। और सुन, दो गिलास बढ़िया खूशबूदार शर्बत का इन्तजाम इस बार करना।

फग्गू— बहुत अच्छा सरकार।

(फग्गू चला जाता है। थोड़ी देर में रामलाल नामक एक व्यक्ति के साथ लौटता है। रामलाल पढ़ा-लिखा युवक है।)

कालू— फग्गू, क्या तोताराम की शकल इतनी जल्द बदल गयी?

फग्गू— हुजूर, तोताराम नहीं थे। यही साहब दरवाजे पर मिल गये।

कालू— क्यों साहब, क्या आप तोताराम हैं?

रामलाल—बाबू कालू प्रसाद जी, क्या आप अन्धे हैं?

फग्गू— नहीं साहब, हमारे मालिक एक आँख वाले हैं। एक ही नजर से सारी दुनिया को देखते हैं।

कालू— फग्गू ठीक कहता है। अन्धा मैं नहीं आप हैं। क्या आप नहीं देखते कि मेरी एक आँख बरकरार है?

रामलाल—जी, आप शायद एकाक्षदेव अर्थात् एकनयन हैं।

कालू— फग्गूलाल, ये सज्जन तो कवि मालूम पड़ते हैं।

फग्गू— जी हाँ हुजूर, ये गीत भी गाते हैं। जब मैंने दरवाजा खोला तो ये फिल्मी गीत गुनगुना रहे थे।

कालू— कमाल है। खैर महाशय, अब आप अपने आने की वजह बतायें। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

रामलाल—कालू प्रसाद जी, मुझे गेहूँ की सख्त जरूरत है। मैंने आपकी दूकान में दर पूछी तो मुझसे दूनी बतायी गयी। क्या मुझे गेहूँ ब्लैक में खरीदना पड़ेगा?

कालू— आपका नाम?

रामलाल—मुझे लोग रामलाल कहते हैं।

कालू— खूबसूरत नाम है। 'राम' ही नहीं 'लाल' भी।—आप क्या करते हैं रामलाल बाबू?

रामलाल—मैं यहाँ स्कूल में एक मास्टर हूँ।

कालू— वाह!—पेशा भी कमाल का है। आप क्या अखबारी आदमी हैं?

रामलाल—आप बेकार के सवाल पूछ कर मेरा समय क्यों नष्ट कर रहे हैं?

कालू— रामलाल बाबू, आपके समय के साथ-साथ मेरे समय का भी तो खून हो रहा है। क्यों फग्गू?

फग्गू— हाँ सरकार।

कालू— रामलाल बाबू, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। देश की सीमा पर दुश्मन हैं। सरकार का आदेश है

कि लोग अनाज कम-से-कम खर्च करें। आपसे क्या यह बात छिपी है ?

रामलाल—तो क्या सरकार ने आपको दूने मूल्य में चीज बेचने का अधिकार दिया है ? ब्लैक मार्केट करने का आपने लाइसेंस लिया है ?

कालू— ब्लैक मार्केट ?—फग्गू ! यह क्या बकते हैं ?

फग्गू— हुजूर, इनका मतलब कालाबाजारी से है।

कालू— फग्गू, क्या तुम मुझसे ज्यादा काबिल हो जो मुझे मतलब समझाते हो ?

फग्गू— नहीं हुजूर, आपकी काबिलियत के सामने मैं अपना सिर झुकाता हूँ।

कालू— शाबाश !—हाँ तो रामलाल बाबू, मेरा मकसद है—यानी अपनी सरकार चाहती है कि अनाज कम खर्च हो। उसी के लिए मैंने गेहूँ की दर दूनी कर दी है। और फिर आप डरते क्यों हैं ?—आप कीमत दूनी दें या तिगुनी। वह तो देश में ही रहेगी अर्थात् मेरे पास रहेगी। इसमें क्या फर्क पड़ता है ? क्यों फग्गू ?

फग्गू— सरकार ठीक कहते हैं। रामलाल दूनी कीमत देंगे तो हमारा व्यापार चमकेगा। आपके पैसे से हमारी दूकान का विकास होगा उसी से सारे देश का विकास होगा।

रामलाल—तुम चुप रहो। दाल-भात में मूसरचन्द। हाँ तो बाबू कालू प्रसाद जी, आप देश को धोखा दे रहे हैं।

सरकार ने आपको गेहूँ बेचने का लाइसेंस इसलिए दिया है कि आप उचित मूल्य पर, उचित तरीके से, जनता में इसका वितरण करें।

कालू — रामलालजी, ऐसे उपदेश मैं बहुत सुन चुका हूँ।

रामलाल—आज जब देश में अन्न-संकट छाया है, सरकार बाहर से गल्ले मँगा कर जनता का पेट भर रही है तो आपकी यह स्वार्थपरता अच्छी नहीं लगती। आपको पैसे की कमी नहीं है। सरकार के विश्वास का दुरुपयोग न कीजिए।

कालू— रामलालजी, उपदेश बन्द कीजिए। मेरा फैसला अटल है। अब आप जा सकते हैं।

रामलाल—अच्छी बात है। मैं जाता हूँ। लेकिन आपकी यह बदनीयत आपको ले डूबेगी—इसे आप जान लें।

(सवेग प्रस्थान)

कालू— फग्गू, दरवाजा फौरन बन्द कर दो। फिर कहीं कोई ऐसा ही बिना पूँछवाला आदमी न आ जाय।

फग्गू— अच्छा सरकार। (फग्गू का प्रस्थान)

कालू— जजीब हाल है। मैंने गेहूँ की कीमत दूनी कर दी तो कौन सी आफत आ गयी ? जब देश पर संकट है तो क्या मुझपर संकट नहीं है ? लोग कहते हैं कि देश के लिए सब कुछ कुर्बान कर दो। फिर लोग बाबू कालू प्रसाद के लिए कुछ कुर्बान क्यों नहीं कर देते ? क्या तमाशा है ? अगर सहयोग की ऐसी कमी रही तो हो चुका देश का विकास।

(कालू प्रसाद के पुत्र एतवारी लाल का प्रवेश। एतवारी लाल कवि है। लम्बे केश। कुरता-धोती। गले में चादर। हाथ में कागजों का बन्डल। फ्रेन्चकट मूँछ। नाक पर ऐनका।)

एतवारी– पिताजी प्रणाम।

(कालू प्रसाद उसे ऊपर से नीचे तक घुरता है।)

कालू— (गम्भीर स्वर में) एतवारी लाल!

एतवारी—पिताजी, आप एतवारी लाल को भूल जाइये।

कालू— भूल जाऊँ?

एतवारी—बिल्कुल।

कालू— क्या तुम्हारा नाम बदल गया?

एतवारी—जी हाँ, बदल गया।

कालू— क्यों?

एतवारी— जी हाँ, बिल्कुल बदल गया। एतवारी लाल अब इस दुनिया में नहीं रहा।

कालू— क्या बकते हो?

एतवारी—बकता नहीं हूँ मैं। आपको सूचना देता हूँ।

कालू – एतवारी, क्या तुम्हारी खोपड़ी उलट गयी है?

एतवारी— जी नहीं, खोपड़ी अपनी जगह पर है। सिर्फ नाम बदल गया है।

कालू— यह नहीं हो सकता। तुम्हारा नामकरण मैंने किया था। तुम्हें कोई हक नहीं कि बाप के दिये गये नाम को तुम बदल दो। हमारे देश के कानून में यह अधिकार किसी बेटे को नहीं दिया गया है।

एतवारी—पिताजी, यह भी कोई नाम है? एतवारी लाल। हुँः। जो सुनता है, वह हँसता है। हमारे मित्र हमारा मजाक उड़ाते हैं। क्या आपको और कोई अच्छा नाम मेरे लिए नहीं मिला था? इसमें भी आपके पैसे लगते थे?

कालू – तुम बेवकूफ हो।

एतवारी—इसमें क्या शक है? अगर बेवकूफ नहीं होता तो इतने दिनों तक इस जंगली नाम को ढोये क्यों फिरता?

कालू— अरे मूर्ख? तू इस नाम के महत्त्व को नहीं जानता, इसीसे ऐसी बातें कहता है।

एतवारी—क्या महत्त्व है इसका?

कालू— तेरा जन्म रविवार अर्थात् एतवार के रोज हुआ था। यह दिन सप्ताह के सभी दिनों में श्रेष्ठ है। इस रोज सभी को छुट्टी रहती है। लड़के गुल्ली-डंडे खेलते हैं। आफिस के बाबू सिनेमा देखते हैं। हाकिम-हुक्काम पार्टियों में जाते हैं। मेरी दूकान बन्द रहती है। अब तुम्हीं बताओ, है किसी दिन का ऐसा महत्त्व? काफी सोच-विचार कर यह नाम मैंने तुम्हें दिया है। और तुम हो कि कुछ समझते ही नहीं।

एतवारी—कुछ भी हो, मुझे यह नाम पसन्द नहीं। मैंने आज अखबार में यह विज्ञापन छपने के लिए भेज दिया है कि मेरा नाम अब यह नहीं रहा।

कालू— बेटे! क्या तूने विज्ञापन दे दिया—सचमुच दे दिया? क्या पैसे भी लगेंगे उसमें?

एतवारी—पैसे काफी लगेंगे? आप के नाम से बिल आयेगा।

कालू— मेरे नाम से?—मैं हर्गिज नहीं दूँगा। अगर तू मेरे कारोबार के लिए अखबारों में कुछ लिखता तो एक बात थी। लेकिन तू तो मेरे पसीने की कमाई को बेरहमी से लुटाने पर पड़ गया है। यह समझदारी नहीं है।

एतवारी—अब आप चाहे जो भी कह लीजिए। लेकिन उस नाम से मैं छुटकारा पा चुका हूँ।

कालू— बेटे, तो क्या तू बिना नाम का रहेगा? अरे बेवकूफ, आजकल तो लोग कुत्ते का भी नाम रखते हैं। तू बिना नाम के कैसे रहेगा? लोग तुझे किस नाम से पुकारेंगे भला? तू ही बता।

एतवारी—अब मैं 'बेखबर' हूँ।

कालू— बेखबर? लेकिन बेखबर होने से काम कैसे चलेगा? खबर तो रखनी ही पड़ेगी।

एतवारी—पिताजी, अब मेरा नाम 'श्री बेखबर जी' होगा।

कालू— यह भी कोई नाम है भला? अगर नाम ही रखना था तो किसी देवता का, किसी नेता का, किसी विद्वान का नाम रख लेता। 'श्री बेखबरजी'!— यह नाम मुझे पसन्द नहीं।

एतवारी—पिताजी, मैं कवि हूँ। कवि का नाम कुछ विचित्र होना चाहिए। यानी ऐसा होना चाहिए कि नाम

सुनने से जनता के दिमाग पर वह छा जाये। लोग कहें—'आइये बेखबरजी, कविता-पाठ कीजिए।'

कालू— और बेखबरजी लगे बेहूदगी से कविता-पाठ करने।

एतवारी—पिताजी, कवि की इज्जत करना गौरव की बात है। कवियों की इज्जत देश-विदेश में होती है। उनके चित्र छपते हैं, कविताएँ छपती हैं, सम्मान में पार्टियाँ दी जाती हैं।

कालू— वाह बेटे! धन्धा बुरा नहीं है।...अब तो ख्वाहिश हो रही है कि मैं भी कवि हो जाऊँ।

एतवारी—आप भी कवि हो जायेंगे! हा! हा! हा!
(हँसता है)

कालू— तुम हँसते क्यों हो? क्या मैं कवि नहीं हो सकता?

एतवारी— क्यों नहीं हो सकते? जरूर हो सकते हैं। लेकिन वही झंझट है। बाप-दादे के दिये गये नाम को बदलना होगा। कालू प्रसाद भी कोई नाम है? छिः; छिः! कालू प्रसाद के जाल से निकलकर ही आप कवि हो सकते हैं।

कालू— कोई परवाह नहीं। छोड़ दिया नाम। चुनो कोई अच्छा-सा नाम—चुभता हुआ, मजेदार।

एतवारी—(चुटकी बजाकर) मारा, नाम तो मेरी चुटकी में है!

कालू— तो बताओ न बेटे।

एतवारी—'बेखटकजी'!

कालू— बेखटकजी! और तुम क्या हो?

एतवारी—मैं हूँ 'वेखबरजी' और आप रहेंगे बेखटकजी।

कालू— यह तो ठीक है। लेकिन कविता का क्या होगा। कविता तो मैं कर नहीं सकता। फिर·····

एतवारी—उसकी चिन्ता आप न करें। आजकल कविता का एक नया रूप निकला है जिसमें छन्द शास्त्र के ज्ञान की कोई जरूरत नहीं, अर्थात् आप जो भी लिख दें वही कविता। अगर आप कुछ ऐसी चीज लिख दें जिसका कोई अर्थ नहीं निकले तो वह और भी ऊँची कविता हो जायेगी।

कालू— कमाल है।

एतवारी—बस, यह भी कविता है। यानी 'कमाल है' आपकी कविता की पहली लाइन हुई।

कालू— तब तो मैं पैदायशी कवि हूँ।

एतवारी—जी हाँ, यह कविता की दूसरी लाइन हुई।

'कमाल है
तब तो मैं पैदायशी कवि हूँ।'

अगर आप चाहें तो इतने के बाद ही कह सकते हैं कि मेरी कविता खत्म हुई, और उसके बाद जनता की तालियाँ।

(तालियाँ बजाकर बताता है)

कालू— मैं समझ गया। कविता करने में कोई मेहनत नहीं। मैं कवि बड़े मजे में बन सकता हूँ।

एतवारी—'बन सकता हूँ'—यह आप क्या कहते हैं? आप तो बन गये कवि। कवि 'श्री बेखटकजी' हो गये आप।

कालू— लेकिन बेटे, इतने बड़े कारोबार का क्या होगा? तुम भी कवि, मैं भी कवि। फिर तेल की दूकान, चने की दूकान और आटे की दूकान का क्या होगा?

एतवारी—फिर मुर्गी की तीन टाँग! आप इस थर्ड क्लास बिजनेस को पता नहीं क्यों इतना पसन्द करते हैं। दूकानों में ताले लगाइये।

कालू— क्या कहा? ताले लगा दूँ? मेरा यह बिजनेस थर्ड क्लास है? बेटा एतवारी लाल, तुम नहीं जानते····

एतवारी—फिर एतवारी लाल। मेरा नाम श्री बेखबरजी है।

कालू— हाँ तो बेखबरजी, इसी बिजनेस से इस परिवार की रोटी-दाल चलती रही, बाजार में इज्जत रही। तुम इसे थर्ड क्लास कहते हो?

एतवारी—देखिये पिताजी, ब्लैक मार्केटिंग अर्थात् काला बाजारी से मुझे सख्त चिढ़ है और आप हैं कि इसीसे चिपके हैं अबतक। आप इसे छोड़ना ही नहीं चाहते। देश का सर्वनाश आप जैसे दूकानदारों ने ही किया है।

(कालू प्रसाद गौर से उसकी ओर देखता है।)

कालू— तुम इस कारोबार में आग लगाकर रहोगे सुपुत्र।

एतवारी—मुझे आपका यह बिजनेस एकदम पसन्द नहीं है।

कालू— अच्छी बात है। मैं जबतक जिन्दा हूँ, इसे चलाऊँगा। मेरे मरने के बाद तुम इसमें आग लगा देना। समझे? अब तुम जा सकते हो।

(एतवारी का प्रस्थान)

कालू— अजीब हाल है! आजकल के लड़कों का तो दिमाग ही समझ में नहीं आता। वे लोग मेहनत करने से

तो जान चुराते हैं और दिखावे की तरफ अधिक ध्यान देते हैं।

(फग्गू का पुनः प्रवेश)

फग्गू— मालिक, उड़ता पंछी हाथ में आ गया।

कालू— उड़ता पंछी ?

फग्गू— जी हाँ, तोताराम।

कालू— तोताराम वापस आ गये ? कहाँ हैं वे ?

फग्गू— आपके दरवाजे पर।

कालू— कमाल है। अच्छा फग्गू, तुम बाहर जाओ। उनका स्वागत करो। उन्हें फिर उड़ने मत देना। मैं वहीं आ रहा हूँ। तुम जाओ।

(फग्गू और कालू विपरीत दिशाओं में प्रस्थान करते हैं।)

-:o:-

दूसरा दृश्य

(मुंशी तोताराम के घर का एक भाग। उनको लड़की का विवाह एतवारी लाल से हो चुका है। बारात अभी रुखसत नहीं हुई है। बाहर शहनाई बज रही है। मुंशी तोताराम का प्रवेश। पीछे-पीछे उनका पुत्र बनवारी है।)

तोताराम—बनवारी !

बनवारी— जी बाबूजी।

तोताराम—शादी तो हो चुकी। बारात के लोग खाना खा चुके। तो फिर यह हुज्जत कैसी ?

बनवारी— कालू प्रसाद जी कहते हैं कि उनके कुछ रुपये बाकी रह गये हैं, वे मिल जाने चाहिएं।

तोताराम—यह कालू प्रसाद तो रुपये का गुलाम है। अपनी बात मरने के बाद भी याद रखता है। शराफत से तो उसे कोई वास्ता ही नहीं।

बनवारी— तो फिर उन्हें क्या कह दूँ ?

तोताराम— देखो बनवारी, शादी में काफी रुपये खर्च हो गये हैं। तिलक-दहेज भी मैं काफी दे चुका हूँ। थोड़े रुपये और देने हैं। अगर कालू प्रसाद नहीं मानते, तो शादी के बाद इन्तजाम कर के भिजवा दूँगा। जब वादा कर चुका हूँ, तो बाकी रुपये भी चुका ही दूंगा। वे इतमिनान रखें।

बनवारी— अच्छी बात है। मैं उसे यही कह दूँगा।

तोताराम—और देखना· बारातवालों को कोई तकलीफ नहीं हो। सिगरेट-पान वगैरह का इन्तजाम है न ?

बनवारी— जी हाँ !

तोताराम—ठीक है। अब तुम जाओ। उधर का इन्तजाम देखो।

(बनवारी का प्रस्थान। उसी रास्ते फग्गू का प्रवेश। तोताराम उसकी ओर नहीं देखता है। फग्गू उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए खाँसता है।)

तोताराम— कौन ? अरे फग्गू लाल ? क्या बात है ? बारात को कोई तकलीफ तो नहीं है।

फग्गू— कोई तकलीफ नहीं है हुजूर। ऐसी शान से शादी राजा-महाराजाओं के घर होती है। क्या ठाठ है ! हुजूर, मुझे मालिक ने भेजा है।

तोताराम—मैं जानता हूँ। उन्होंने रुपये-वसूली के लिए तुम्हें भेजा होगा।

फग्गू— जी.....

तोताराम— फग्गूलाल शादी में काफी रुपये खर्च हो गये हैं। बाकी रकम तो बाद ही में चुका सकूँगा मैं।

फग्गू— लेकिन हुजूर, व दे के मोताबिक तो यह रकम शादी के पहले ही मिल जानी चाहिए थी।

तोताराम— मुझे अपना वायदा याद है फग्गू। लेकिन तुम्हारे मालिक शायद अपने वायदे को भूल गये।

फग्गू— भूल गये ? कैसे ?

तोताराम— उन्होंने कहा था कि बारात में वे कुल एक सौ आदमी लायेंगे, लेकिन मैं देखता हूँ कि लोग पाँच सौ से भी ज्यादा हैं। यह बारात है या फौज ? अब तुम ही बताओ कि यह मेरी इज्जत उतारने की बात है या नहीं ? क्या इनके स्वागत सत्कार में मेरे रुपये पाँच गुने अधिक नहीं खर्च हुए ?

फग्गू— बात यह है हुजूर कि मालिक ठहरे दरियादिल रईस। भला एक सौ आदमी की बारात भी कोई बारात होती है ? वह भी आपके रुतबा का ख्याल करना चाहते थे। इसी से पाँच सौ आदमी ले आये।

तोताराम—फग्गू लाल, इसी दिखावे में तो हम चौपट हो रहे हैं। यह अन्न का दुरुपयोग है। पाँच सौ आदमियों के खिलाने में अनाज की कितनी बर्बादी हुई, इसका अनुमान तुम नहीं कर सकते।

फग्गू— आप चिन्ता क्यों करते हैं हुजूर ? आखिर हमारी यह सरकार किस रोज काम आयेगी—राशन का इन्तजाम करना तो सरकार का काम है।

तोताराम— यही तो ज्यादती है फग्गू। अपने देश की खाद्य-समस्या दिनों दिन जटिल होती जा रही है। देश में राशन वितरण की व्यवस्था की गयी है ताकि सबको भोजन मिल सके। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सरकार को सहयोग दें ताकि खाद्य समस्या सुलझ सके। अनाज बर्बाद करके हम जरूरतमन्द को तकलीफ तो देते ही हैं, साथ ही सरकार के

सामने भी दिक्कत उपस्थित करते हैं। यह ठीक नहीं है।

फग्गू— लेकिन हुजूर, हमारे मालिक भी तो पढ़े-लिखे आदमी हैं। वे.....

तोताराम— पढ़ने-लिखने से क्या होता है फग्गूराल ? सोचकर काम करना चाहिए। शादी का अर्थ है खुशी। लेकिन होता यह है कि लड़के वाले के व्यवहार से बेचारे लड़कीवाले की दुर्गति हो जाती है। मेरा ही हाल देखो न, एक सौ आदमियों को खिलाना था, लेकिन खिलाना पड़ा पाँच सौ आदमियों को। जहाँ तक हो सका, तिलक-दहेज में मैंने दिया ही था। लेकिन कुछ रुपयों के लिए कालू प्रसाद अड़े हुए हैं।

(एतवारी लाल का प्रवेश। वह तोताराम को प्रणाम करता है। तोताराम उसे आशीर्वाद देकर बैठाता है। एतवारी दूल्हे की पोशाक में है।)

एतवारी— बाबूजी चल बसे। (रोने लगता है)

तोताराम— (आश्चर्य से) क्या ?

फग्गू— क्या मालिक चल बसे ? (रोने लगता है)

(इसी वक्त पृष्ठभूमि में बजती शहनाई की आवाज और तेज हो जाती है।)

तोताराम— (नेपथ्य की ओर देखकर) अरे बदतमीजों, शहनाई बन्द करो। (शहनाई का बजना बन्द हो जाता है)

मेरे समधी साहब चल बसे और ये कम्बख्त शहनाई बजा रहे हैं। बेटा, उन्हें हुआ क्या था ?

एतवारी— एक साथ कई चीजें हुईं। हाय मेरे पिताजी !

तोताराम— यह शादी तो बड़ी मँहगी पड़ी। शादी नहीं, बर्बादी हो गयी।

एतवारी— बेशक हो गयी। बाबूजी शादी को हमेशा बर्बादी मानते थे।

तोताराम— लगता है, बाकी रुपये नहीं मिलने के कारण ही उन्हें सदमा लगा है।

एतवारी— सदमा के साथ-साथ 'शॉक' यानी धक्का लगा और वे चल बसे—बहुत गुस्से में चल बसे।

तोताराम— गुस्से में ? तुमने मुझे बुलाया क्यों नहीं ? बड़े अफसोस की बात है। लोग क्या कहेंगे ? थोड़े से रुपयों के लिए मैंने एक तरह से उनकी जान ले ली।

एतवारी— खैर, कोई बात नहीं। यह उनका पुराना तरीका है।

तोताराम— पुराना तरीका ? क्या मतलब ?

एतवारी— जी हाँ ! एक बार माताजी से भी झड़प हो गयी थी तो पिताजी चल बसे थे।

तोताराम— फिर चल बसे थे यानी स्वर्ग जाकर लौट आये थे ?

एतवारी— जी नहीं, दूसरे मुहल्ले में जाकर लौट आये थे ?

(हँसता है)

तोताराम— तुम हँसते हो ?

एतवारी— जी नहीं, अब रोता हूँ। (रोने लगता है)

तोताराम— (स्वगत) बात कुछ समझ में नहीं आती। यह तो अजीब खफ्ती है। एक बार कालू प्रसाद ने कहा था कि उनका बेटा कवि है। लगता है, आज वह कविता के मूड में है बेटा एतवारी लाल!

एतवारी— सौरी फादर, मैं एतवारी लाल नहीं हूँ।

तोताराम—एतवारी लाल नहीं हूँ! तो फिर कौन हो तुम?

एतवारी— मेरा नाम 'बेखबर जी' है।

तोताराम—अच्छा श्री 'बेखबर जी', सच-सच बताइये—

एतवारी— मैं कवि हूँ—कभी सच नहीं बोलता मैं।

तोताराम—क्या सचमुच तुम्हारे पिताजी स्वर्गवासी हो गये?

एतवारी— मेरे पिताजी स्वर्गवासी हो गये! फग्गूलाल, यह मैं क्या सुन रहा हूँ?

फग्गू— छोटे मालिक, आपके दोनों कान ठीक से काम कर रहे हैं। जो मुंशीजी ने कहा, वही आपने सुना।

एतवारी— क्या मेरे पिताजी स्वर्गवासी हो गये?

फग्गू— आप क्या कहते हैं?

एतवारी— मैं कुछ नहीं कहता। मुंशीजी, आप मुझे बेवकूफ बना रहे हैं।

तोताराम— बेटा, तुमने अभी-अभी कहा है कि कालू प्रसाद जी चल बसे।

एतवारी— जरूर चल बसे।

तोताराम— यानी मर गये।

एतवारी— हर्गिज नहीं। मरें उनके दुश्मन।

तोताराम— तो क्या वे जिन्दा हैं?

एतवारी— तो क्या आपको शक है?

तोताराम— लेकिन तुमने तो कहा कि वे चल बसे।

एतवारी— इसका मतलब यह थोड़े ही हुआ कि वे मर गये।

तोताराम— 'चल बसे' का अर्थ होता है कि 'मर गये'।

एतवारी— ओह! वेरी सौरी! तो यही समझ लीजिए कि मेरे पिताजी अभी नहीं चल बसे हैं।

(कालू प्रसाद का प्रवेश। समधियाना ठाठ।)

कालू— अरे बेटे, कौन अभी तक नहीं चल बसा है?

एतवारी— पिताजी, आपही की चर्चा हो रही थी। यहाँ तो रोना-धोना मच गया था। शहनाई का बजना बन्द कर दिया गया।

कालू— आखिर क्यों?

तोताराम— समधी साहब, आपके साहबजादे अर्थात् मेरे दामादराम ने आकर कहा कि पिताजी चल बसे, याने कि····(हाथ से ऊपर जाने का इशारा करता है।)

कालू— क्यों रे एतवारी, क्या तू चाहता है कि मैं मर जाऊँ?

एतवारी— पिताजी, आप गुस्से में जब भी होते हैं, मेरा नाम भूल जाते हैं। मेरा नाम एतवारी लाल नहीं है, मैं श्री बेखबर जी हूँ।

कालू— तुम गदहे हो।

एतवारी— लेकिन आप मेरे पिताजी हैं।

तोताराम— अजी कालू प्रसादजी, आइये, तशरीफ रखिये।

(कालू प्रसाद बैठता है।)

कालू— मुंशीजी, मेरा ख्याल है कि रूखसती अगर आज हो जाती तो बड़ा अच्छा होता।

तोताराम— मुझे कोई एतराज नहीं है।

कालू— लेकिन, अर्ज था कि जो बाकी रुपये हैं···

तोताराम— वह तो बनवारी से आपको कहला दिया था कि अभी मेरे हाथ खाली हैं, पीछे भिजवा दूँगा।

कालू— लेकिन मुंशीजी, शादी के बाद ऐसे रुपये अक्सर डूब जाते हैं।

तोताराम— तो फिर डूबा ही समझिये।

कालू— क्या मतलब ?

तोताराम— जब आप मेरा यकीन नहीं करते, मेरी मजबूरी नहीं समझते तो फिर और क्या कहूँ ?—रिश्ता तो हो ही गया। यह तो टूट नहीं सकता।

एतवारी— पिताजी, आप भी थोड़े से रुपयों के लिए इन्हें परेशान कर रहे हैं। छोड़िये भी।

कालू— तू चुप रह। तू क्या जानता है रुपये का महत्त्व ?

तोताराम— समधी साहब, आप मेरे रिश्तेदार हो चुके। अब मेरी इज्जत आपके हाथ है। मैंने आपसे बार-बार निवेदन किया, लेकिन कुछ खर्चा तो आपने ही बढ़ा दिया। अगर आप बारात में इतने आदमी नहीं लाते तो शायद बचे रुपये आपके ही होते। लेकिन आप ही बताइये कि अभी मैं क्या कर सकता हूँ।

कालू— (अचानक अपना पेट पकड़ लेता है) बेटा एतवारी !

एतवारी— पिताजी, बेरी सौरी। एतवारी को आप भूल नहीं पाते। मैं श्री बेखबर जी हूँ।

कालू— अरे बदतमीज ! मेरे पेट में बड़ा दर्द हो रहा है।

तोताराम— (चौंककर) दर्द ?

कालू— हाँ दर्द—भयानक दर्द। लगता है, पेट के भीतर कोई चाकू चला रहा है।

एतवारी— वन्डरफुल ! पिताजी, यह आदमी आपके पेट में घुस कैसे गया ? और फिर चाकू भी जब उसके हाथ में था तो आपने उसे अपने पेटरूपी कमरे में जाने क्यों दिया ?—यह तो वेरी डेन्जरस केस है—यानी बहुत खतरनाक है।

कालू— (कराहते हुए) मुंशीजी, मेरी हालत बहुत खराब हो रही है।

तोताराम— समधी साहब, यह आपको हो क्या गया है एकाएक ? मैं समझ नहीं पाया।

कालू— यही तो मेरी समझ में भी नहीं आता। बाप रे ! मैं मरा !

एतवारी— नहीं पिताजी, आत्महत्या अपराध है। मैं आपको मरने नहीं दूँगा।

कालू— अरे बेवकूफ, जा किसी डाक्टर को बुला ला।

तोताराम— लगता है, जागरण और खाने-पीने की गड़बड़ी से समधी साहब की तबीयत खराब हो गयी है। (पुकारकर) बेटा बनवारी !

बनवारी— (नेपथ्य से) हाँ पिताजी !

तोताराम— सुनो, मेरे कमरे में पाचक की एक शीशी है। उसमें से थोड़ा सा ले आओ। साथ में एक ग्लास पानी भी लाना। जल्दी करो।

कालू— मुंशीजी, लगता है, पाचक से कुछ नहीं होगा। आप किसी डाक्टर को बुलवाइये।

तोताराम— समधी साहब, वह लोहाभस्म पाचक है। लोहा भी अगर खाइये तो उसे भी वह पचा देगा। जरा आजमा कर तो देखिये। (इसी बीच बनवारी पाचक और एक ग्लास पानी लेकर आता है। कालू प्रसाद पाचक खाकर पानी पीता है।)

एतवारी— (कुछ देर बाद) पिताजी, अब आपकी तबीयत कैसी है ? क्या अब भी चाकू चल रहा है ?

कालू— जरा ठहरो। आराम करने दो। लगता है। चाकू का जोर कुछ कम हो रहा है। लेकिन पूरी तरह बन्द नहीं हुआ है।

तोताराम— बनवारी, जाओ किसी अच्छे डाक्टर को बुला लाओ।

बनवारी— बाबूजी, लगता है, यह सब खानपान के कारण हुआ है।

कालू— बेटे, अपने राम ने तो तुम्हारे घर की सिर्फ कुछ पूरियाँ और कचौरियाँ खाईं। हाँ, रसगुल्लों की संख्या कुछ अधिक थी। लेकिन बेटे, रसगुल्लों में चाकू का जोर नहीं होता।

तोताराम— समधी साहब, आप तो जानते ही हैं कि बाजार का

आटा आजकल अच्छा नहीं होता। आटा में मिलावट रहती है। सम्भव है, पूरियों और कचौरियों का आटा ठीक नहीं हो या सरसों का तेल खराब हो।

कालू— बेटा बनवारी, तुमने आटा किस दूकान से खरीदा था ?

बनवारी— आप ही की दूकान से।

कालू— क्या कहा ? मेरी दूकान से ? मुंशीजी, पेट में चाकू का जोर बढ़ गया ? मेरी दूकान से आटा क्यों खरीदा तुमने ?

तोताराम— क्यों ? क्या बात है समधी साहब ? आपकी दूकान से आटा लेने से क्या खराबी हो गयी ?

कालू— अजी साहब, मेरी दूकान के आटे में फिफ्टी परसेन्ट पत्थर का चूर्ण मिला होता है। यानी अगर एक सेर आटा मैंने खाया तो उसमें आधा सेर पत्थर का चूर्ण था।

एतवारी— पिताजी, तो यह चाकू का जोर नहीं, पत्थर का जोर है। आपके पेट में पत्थर चल रहे हैं—धड़ाम ! धड़ाम !! यह मेरी कविता का बड़ा खूबसूरत विषय है। चाकू नहीं, पत्थर ! धड़ाम ! धड़ाम !!

कालू— बेटा एतवारी ! तू मजाक करता है ?

एतवारी— —नो मजाक ! रियेल पोयेट्री—अच्छी कविता, नो मिलावट—बिल्कुल प्योर। पिताजी, मैं अभी आया।

(प्रस्थान)

कालू— बेटा बनवारी, सरसों का तेल तुमने किस दूकान से खरीदा था ?

बननारी— आप ही की दूकान से।

(कालू प्रसाद अपना सिर ठोकता है)

कालू— सरसों के तेल में भी मिलावट थी। बाप रे ! मेरी अकलमन्दी मुझे ही ले डूबी !

तोताराम— समधी साहब, धन कमाने की लालच में आपने अपने हजारों देशवासियों का स्वास्थ्य इसी प्रकार नष्ट किया होगा इस पाप की सजा कठिन से कठिन होनी चाहिए ! एक तरफ तो आप दूनी कीमत वसूलते हैं, दूसरी तरफ खाने-पीने की चीजों में जहर मिला देते हैं। अच्छा ही हुआ कि आज आपने उसका परिणाम खुद देख लिया।

कालू— (बेचैनी से) देख लिया। बिल्कुल देख लिया। लेकिन मैं अभी क्या करूँ ? किस तरह इस दर्द से छुटकारा पाऊँ। आह ! आह !

(एतवारीलाल का पुनः प्रवेश)

एतवारी— पिताजी, बारात के करीब बीस आदमी पेट के दर्द से छटपटा रहे हैं। लगता है, आप ही की तरह उनके पेट में भी रोड़े चल रहे हैं—कौरी, पत्थर चल रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि आपकी अक्लमंदी से सबकी लाश एक साथ ही निकले।

कालू— (बेचैनी से) नहीं, नहीं, मुंशी जी, आप कोई उपाय कीजिए। किसी अच्छे डाक्टर को बुलवाइये। मैं अगर मर भी जाऊँ तो कोई बात नहीं। लेकिन

बेचारे बारात वाले बच जायें। जल्दी कुछ कीजिए मुंशीजी।

तोताराम— बेटा बनवारी, जब इतने मरीज एक साथ तड़प रहे हैं तो एक डाक्टर से काम नहीं चलेगा। तुम जल्द से जल्द तीन-चार डाक्टर को बुलाओ। अगर वे नहीं मिल पायें तो हालत बताकर दवा ले आओ ! जरा जल्दी करना। (बनवारी का प्रस्थान)

कालू— मुंशीजी, सचमुच धन कमाने की चिन्ता में मैंने धर्म-ईमान सब कुछ ताक पर रख दिया। अगर जिन्दा रह गया तो अब यह सब बिल्कुल छोड़ दूँगा। अपनी जिन्दगी के इस काले धब्बे को मिटाने की कोशिश करूँगा।

(फग्गू का प्रवेश। हाथ में दवा की शीशी)

फग्गू— मालिक, इसमें की एक खुराक दवा फौरन पी लीजिए। दर्द में आराम होगा। मैंने ज्योंही आपकी बीमारी का हाल सुना, मैं फौरन दौड़ा हुआ डा० सेन के पास चला गया।

कालू— तुम बड़े वफादार नौकर हो फग्गू लाल।

(दवा पीता है)

कालू— (कुछ देर बाद) मुंशीजी, दर्द कुछ कम हो रहा है। लगता है, अब मैं बच जाऊँगा।

तोताराम— भगवान ने मेरी इज्जत रख ली समधी साहब। कहीं कुछ हो जाता तो मैं मुँह दिखाने लायक नहीं रहता। लोग कहते कि कैसे अभागे के घर शादी हुई कि समधी वहीं ढेर हो गया।

कालू — समधी साहब, अब आपके जिम्मे मेरा कुछ बाकी नहीं रहा। मैंने आपसे बदसुलूकी की—इसके लिए मैं शर्मिन्दा हूँ। मुझे माफ कीजिए।

तोताराम— आप तो नाहक हमें शर्मिन्दा कर रहे हैं। भला मैं किस काबिल हूँ।

कालू— बेटा एतवारी लाल !

एतवारी— फिर गलती ! मैं हूँ श्री बेखबर जी।

कालू — अच्छा श्री बेखबर जी, मैं तो अब ठीक हूँ। अब आप जाकर बारात के अन्य मरीजों की भी खबर लीजिए। उनके लिए दवा-दारू का इन्तजाम कीजिए।

एतवारी— जी हाँ, मैं जाता हूँ।

(एतवारी लाल का प्रस्थान। अन्य लोग पूर्ववत् रहते हैं। परदा गिरता है।)

❀ समाप्त ❀

प्रसिद्ध नाटककार

श्री चतुर्भुज का

अगला नाटक

शिवाजी

एक साधारण मराठा-परिवार में जन्मे शिवाजी ने अपने समय के महापराक्रमी मुगल-सम्राट् औरंगजेब से किस प्रकार लोहा लिया और कैसे मराठा-साम्राज्य की नींव डाली, उनके क्या उद्देश्य थे—इन सब दृश्यों का आनन्द लें देशभक्ति-पूर्ण, एक स्त्री-पात्रीय ऐतिहासिक नाटक 'शिवाजी' में—

—मूल्य : ढाई रुपये

प्रकाशक :

मगध कलाकार प्रकाशन,

१०६, श्रीकृष्णनगर, पटना–१ (बिहार)

अनन्त कुमार, एम० ए० (लेखक)

परिचय

जन्म १९३६ ई०

शिक्षा—एम० ए० (पालि और बौद्ध साहित्य)। 'मगध कलाकार' के प्रारंभ से सक्रिय सदस्य तथा अभिनय में बचपन से ही भाग लेना। नाटक-लेखन और मंचीकरण की प्रेरणा अपने अग्रज श्री चतुर्भुज से पायी। बिहार सरकार के जन-सम्पर्क-विभाग की गीत-नाट्य-शाखा में एक 'संगठक' के रूप में सेवा। फिर भारत सरकार की 'आकाशवाणी' के समाचार-विभाग में नियुक्ति, जहाँ अभी काम कर रहे हैं। अनेक रंगमंचीय और रेडियो नाटकों के अभिनेता।

मगध कलाकार-प्रकाशन के महत्वपूर्ण नाटक

१. मेम्बर जी की शादी : ले०—अनन्त कुमार-मूल्य १ रु० ७५ पै०
२. झाँसी की रानी : ले०—चतुर्भुज -मूल्य २ रु० ५० पै०
३. भीष्म प्रतिज्ञा : ले०—चतुर्भुज -मूल्य २ रु० ५० पै०
४. बन्द कमरे की आत्मा : ले०—चतुर्भुज -मूल्य २ रु० ५० पै०
५. शिवाजी : ले०—चतुर्भुज -मूल्य २ रु० ५० पै०

श्री चतुर्भुज के अन्य नाटक :—कलिंग-विजय, श्रीकृष्ण, मेघनाद, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, करबला का शेर, कर्ण, कुँवर सिंह, भगवान बुद्ध, पणकुमारी, कंस-वध, पाटलिपुत्र का राजकुमार, मोर्चे पर, बहादुरशाह, झेलम के किनारे, विजय-तिलक, इतिहास बोल उठा (लेख-संग्रह), कमरे की छाया (कहानी-संग्रह) आदि।

प्राप्ति-स्थान :—

मगध-कलाकार-प्रकाशन,

१०६, श्रीकृष्णनगर, पटना—१ (बिहार)